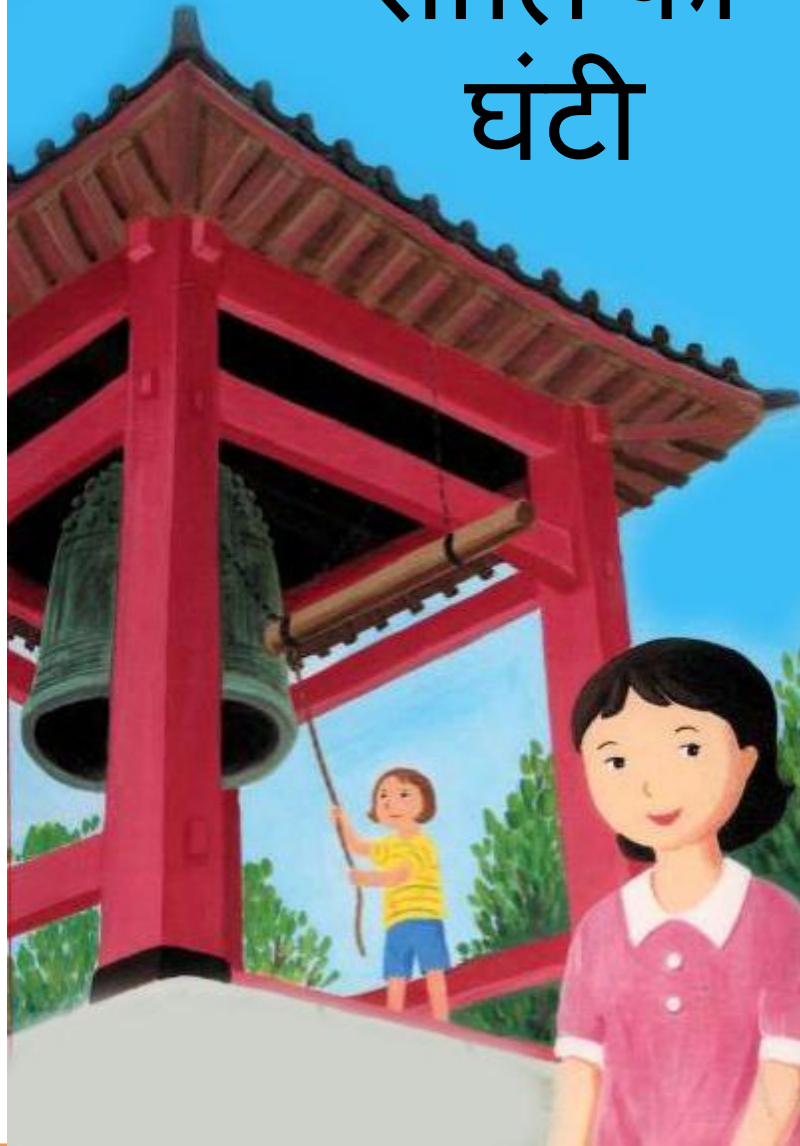


# शांति की घंटी



युको की दादी को याद है कि जब वो बहुत साल पहले जापान में एक छोटी बच्ची थीं तो उनके शहर के मंदिर की खूबसूरत घंटी को युद्ध के दौरान ले जाया गया था. घंटी को पिघलाकर उसका युद्ध में उपयोग किया जाना था. दादी ने सोचा कि वो उस घंटी को दुबारा फिर कभी नहीं देख पाएंगी.

युद्ध खत्म होने के बाद अमरीकी नौ-सेना का एक जहाज़ उस घंटी को अमेरिका लाया. उन्हें वो घंटी एक जापानी शिपयार्ड के कबाड़ में पड़ी मिली थी. सबसे आश्चर्यजनक बात यह हुई कि बाद में अमरीका ने दोस्ती का हाथ बढ़ाते हुए घंटी जापान को वापिस लौटाई.

शांति की यह घंटी आज अमेरिकी-जापानी मैत्री का पूरे संसार में एक प्रतीक बन गई है.





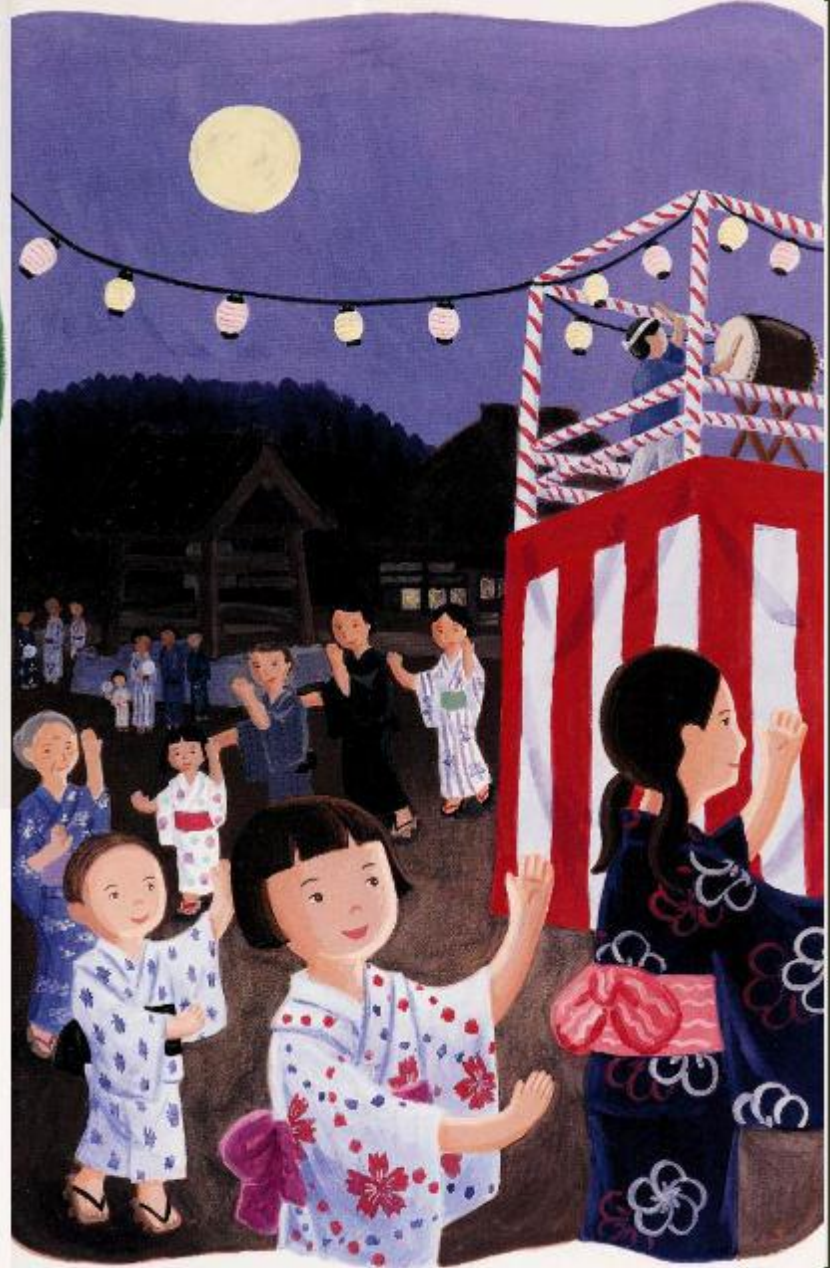
यूकू और मैं अपनी दादी के साथ उस गली में से भागे जो चमकीले हरे धान के खेतों में से होकर गुजरे.

आज हमें कुछ खास देखेंगे. यह यूको के लिए विशेष होगा क्योंकि वो जापान में रहती थी, और मेरे केटी-चान के लिए भी, क्योंकि मैं अमेरिका से आई थी. यूको की दादी के लिए भी वो महत्वपूर्ण था. जैसे-जैसे हम पहाड़ी के शांत ऊंचे पेड़ों में से होकर गुजरे दादी ने हमें यह सुन्दर कहानी सुनाई.



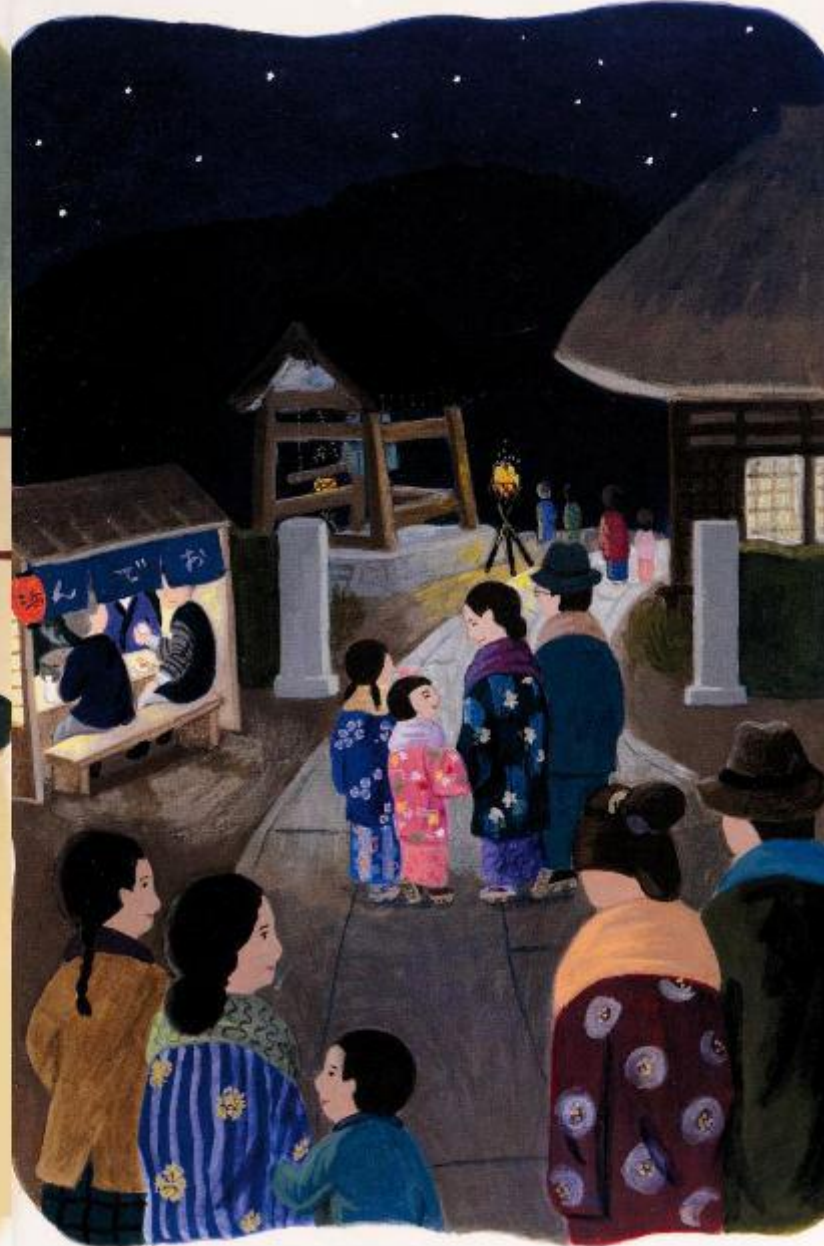


बहुत समय पहले, जब मैं तुम्हारी उम्र की थी तो मैं चेरी के कोमल, सुन्दर फूलों से बहुत प्यार करती थी। तब मुझे "बॉन ओडोरी" ड्रम की गहरी आवाज़ भी बहुत पसंद थी। मुझे समुद्र में गोल निकालता हुआ चन्द्रमा भी बहुत अच्छा लगता था। हालांकि चन्द्रमा बहुत दूर था, लेकिन मुझे ऐसा लगता था कि मैं उसे छू पाऊंगी। लेकिन मुझे सबसे ज्यादा प्यार एक प्राचीन मंदिर की घंटी से था। घंटी की ध्वनि चेरी फूलों जितनी सुन्दर थी, बॉन ओडोरी ड्रम जितनी गहरी थी, और चांद के समान सुन्दर थी।





नए साल की पूर्वसंध्या, मेरे लिए साल का सबसे पसंदीदा दिन था। उस शाम मेरा पूरा परिवार तोशी-कोशी सोबा के लंबे नूडल्स खाता था, और फिर मंदिर जाते थे। मंदिर के सामने का मैदान महिलाओं के रंगीन किमोनो और "साके" (शराब) पीते पुरुषों से भरा होता था। सभी लोग शांति से इंतज़ार करते थे। वे सभी मंदिर की घंटी बजने का इंतजार करते थे।





आधी रात के समय, घंटी बजना शुरू होती थी.  
वो बारह बार, बारह महीनों के लिए,  
चौबीस बार, चौबीस वायुमंडलों के लिए,  
बहत्तर बार, पृथ्वी के बहत्तर मौसमों के लिए बजती थी.  
कुल मिलाकर घंटी, एक सौ आठ बार बजती थी. और उससे वो दुनिया  
को एक-सौ आठ चिंताओं से, लोगों को मुक्ति दिलाती थी. और घंटी के  
बजने के बंद होने के बाद मेरे अंदर घंटी का गीत बजने लगता था.



उसके बाद युद्ध शुरू हो गया और फिर नए साल का जश्न मनाना भी बंद हो गया. युद्ध में तंगी के कारण महिलाएं नए किमोनो नहीं सिलवा सकीं. अक्सर घरों में सूप के लिए नूडल्स तक नहीं होते थे!

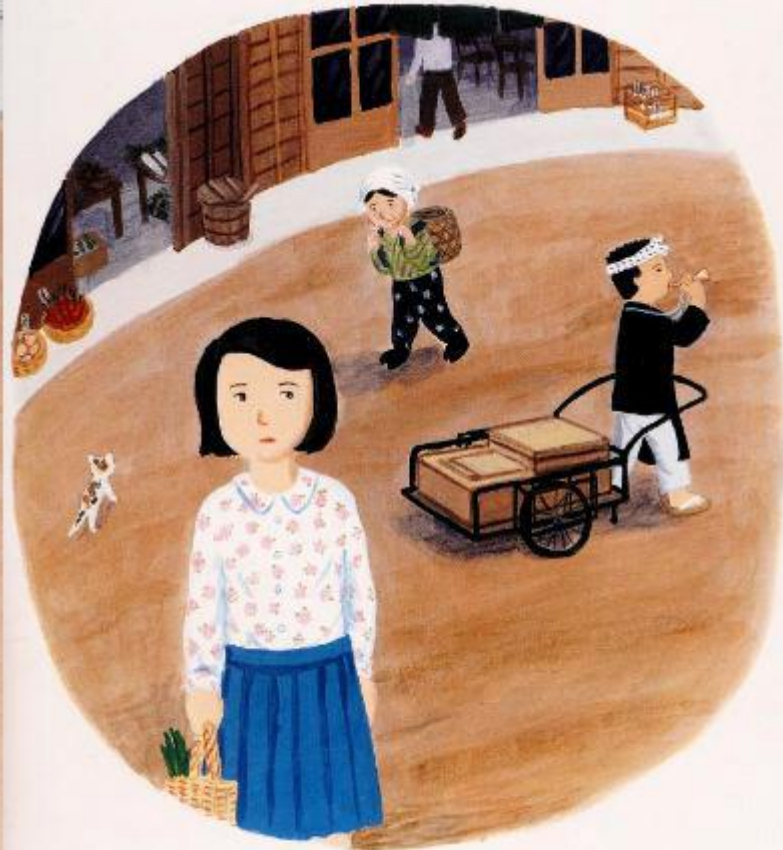


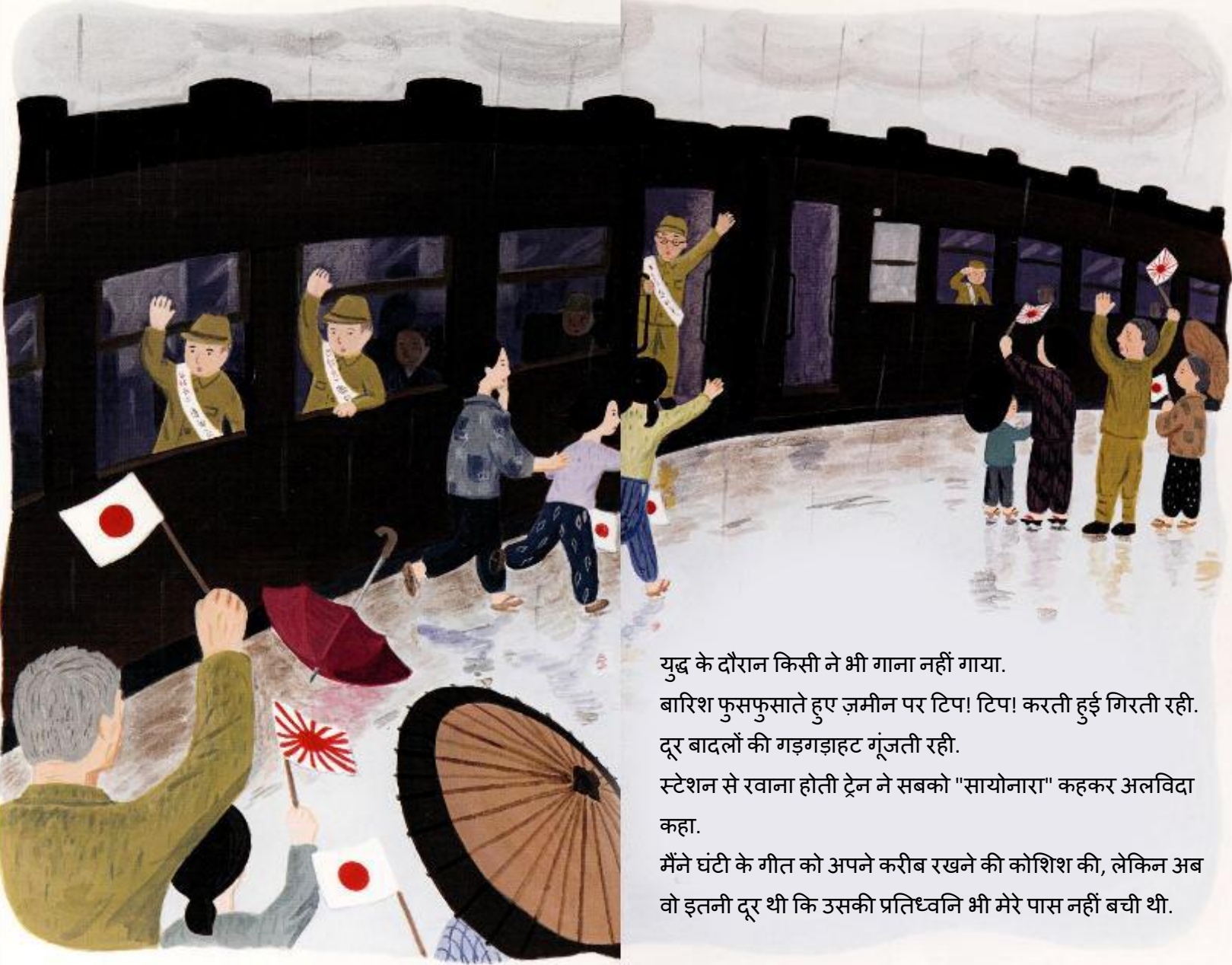
यहां तक कि अब घंटी भी अपने स्थान से चली गई थी.



"वो घंटी शायद टोक्यो या योकोसुका चली गई है," मछलीबाजार की महिलाओं ने कहा, "उसे युद्ध के प्रयासों के लिए दान कर दिया गया है." हर शहर से यह उम्मीद थी कि वो युद्ध के लिए कुछ धातु दान करेगा. "क्या युद्ध समाप्त होने पर घंटी वापिस आएगी?" मैंने पूछा. "ऐसा लगता तो नहीं है," ईल मछली बेचने वाली महिला ने कहा. "घंटी कभी वापस नहीं आएगी. उसे पिघलाकर उसकी धातु से बंदूक की नली या शेल केसिंग बनाई जाएगी."

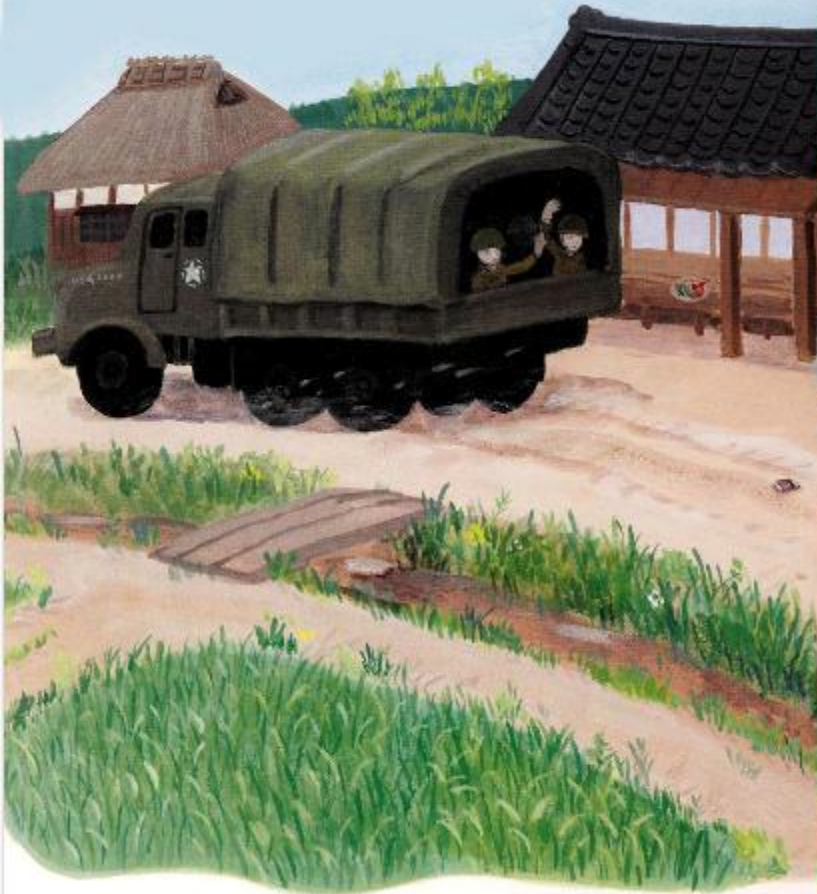
यह सुनकर मुझे बहुत गुस्सा आया. मुझे पता था कि युद्ध का समर्थन करना ज़रूरी था. लेकिन एक शांति-घंटी से हथियार बनाने की बात मुझे सरासर गलत लगी. "जब युद्ध समाप्त हो जाएगा, तब सैनिक घर जाएंगे, और तब घंटी भी वापस आएगी," मैंने कहा. फिर मैंने एक हंसमुख गाना गाने की कोशिश की, लेकिन गाने के बोल मेरे गले में ही अटककर रह गए.





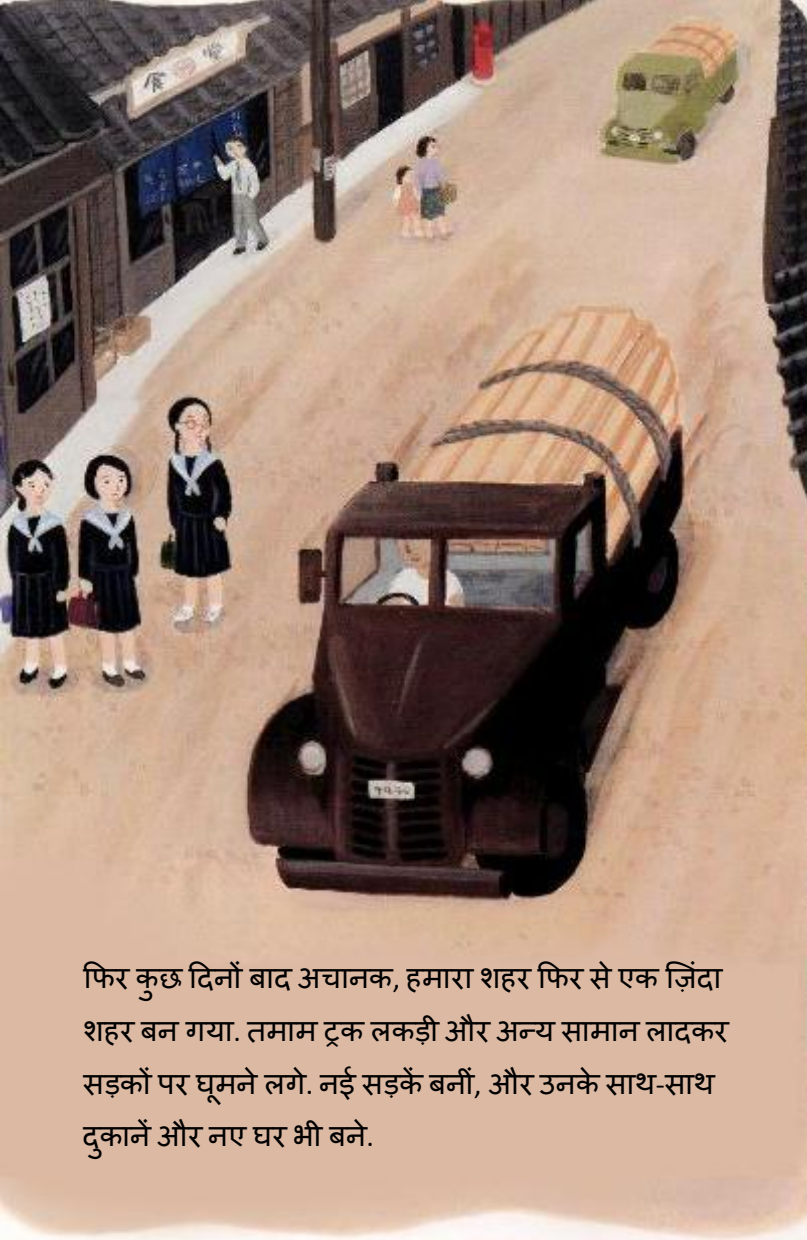
युद्ध के दौरान किसी ने भी गाना नहीं गाया.  
बारिश फुसफुसाते हुए ज़मीन पर टिप! टिप! करती हुई गिरती रही.  
दूर बादलों की गड़गड़ाहट गूंजती रही.  
स्टेशन से रवाना होती ट्रेन ने सबको "सायोनारा" कहकर अलविदा  
कहा.  
मैंने घंटी के गीत को अपने करीब रखने की कोशिश की, लेकिन अब  
वो इतनी दूर थी कि उसकी प्रतिध्वनि भी मेरे पास नहीं बची थी.

अंत में युद्ध समाप्त हुआ. लेकिन लोग फिर भी खुश नहीं थे.  
एक बार जब अमेरिकी सैनिकों से भरा एक ट्रक शहर में घुसा तब  
सभी लोग डर के मारे अपने-अपने घरों में घुस गए. मैं अपनी दोस्त  
के साथ बाहर थी इसलिए हम यह नहीं कर पाए. तब हमने अपनी  
सांस रोककर खुद को अदृश्य बनाने की कोशिश की.



सैनिकों ने अपने हाथ लहराकर हमारा अभिवादन किया और  
हमारी ओर चॉकलेट फेंकी. लेकिन हमने डर के मारे उन्हें नहीं  
उठाया. सैनिकों के जाने के बाद गर्मी में सिर्फ झींगुरों की  
आवाज़ ही सुनाई दी.





फिर कुछ दिनों बाद अचानक, हमारा शहर फिर से एक ज़िंदा शहर बन गया। तमाम ट्रक लकड़ी और अन्य सामान लादकर सड़कों पर घूमने लगे। नई सड़कें बनीं, और उनके साथ-साथ दुकानें और नए घर भी बने।

मेरे कान लोगों की आवाज़ों से भर गए, और मेरी नाक खाने की अच्छी खुशबुओं से।





साल बीतते गए और मेरा दिल भी धीरे-धीरे करके भरने लगा.  
जल्द ही माँ ने मेरी शादी के लिए एक सुन्दर रेशम का किमोनो  
बनाया.



बाद में मैंने अपनी बच्ची का भी खूब लाड-प्यार किया.  
लेकिन मेरे दिल में अभी भी एक खाली स्थान था - मंदिर की  
घंटी का गीत अभी भी नदारद था.



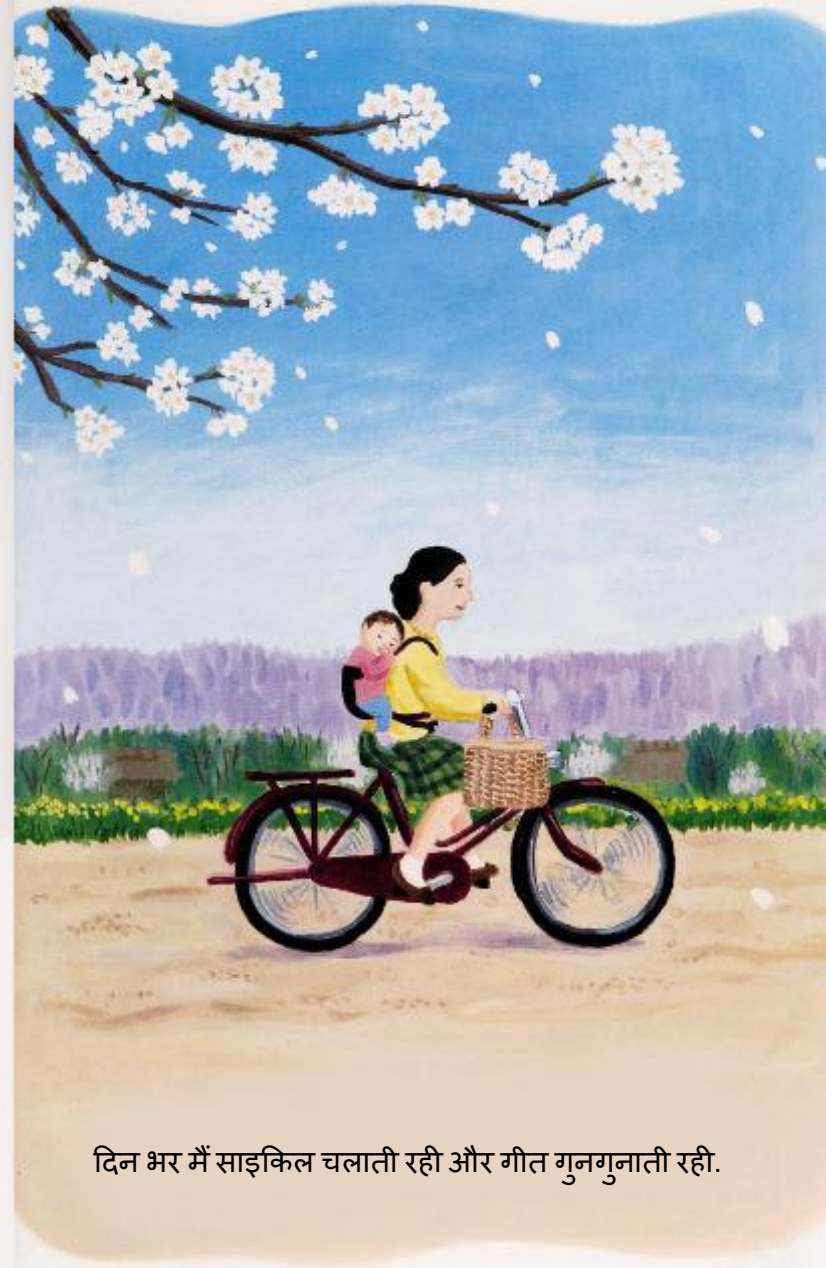
फिर एक दिन मछली बाजार में मैंने महिलाओं को यह कहते हुए सुना,  
"घंटी वापस आ रही है! पुराने मंदिर की घंटी - अमेरिका उसे वापस भेज  
रहा है!"

"अमेरिकियों के पास हमारी घंटी कैसे पहुंची?" मैंने पूछा.

"कुछ अमेरिकी नाविकों को घंटी योकोसुका शिपयार्ड में मिली और फिर  
वे उसे अमरीका में मिनेसोटा ले गए."

"लेकिन वे उसे वापस क्यों भेज रहे हैं?"

"शायद अपनी दोस्ती दिखाने के लिए."



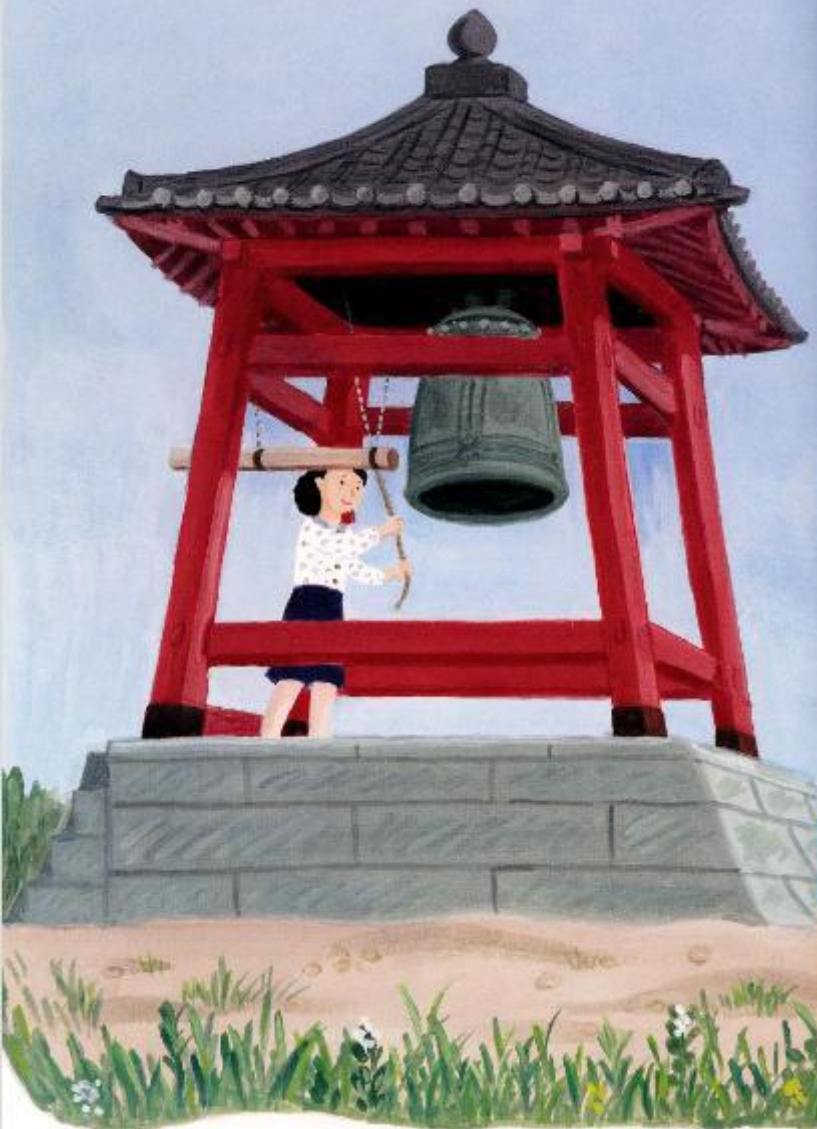
दिन भर मैं साइकिल चलाती रही और गीत गुनगुनाती रही.

जब घंटी शहर में आई तो लोगों ने खुशी से बड़ा जश्न मनाया।  
एक लम्बी परेड शहर की सड़कों पर से गुज़री। उसमें ड्रम और बांसुरी  
बजाते हुए, चमकीले कीमोनो में, बच्चे झंडे लहरा रहे थे। घंटी किसी  
सम्राट की तरह एक बड़ी गाड़ी में सवार थी। उस दिन लोगों ने खूब  
गीत गाए और नृत्य किया और कई लंबे भाषण हुए।



घंटी को "पीस बेल" यानि "शांति घंटी का नाम  
दिया गया। और उसे एक हिलटॉप पार्क में एक नए  
घंटा-घर की मीनार में रखा गया।





कई वर्षों के मौन के बाद, घंटी को अपना गीत सुनाने की अनुमति मिली. घंटी की ध्वनि चेरी फूलों जितनी सुन्दर थी, बॉन ओडोरी ड्रम जितनी गहरी थी, और चांद के समान सुन्दर थी.

उसके बजने से बीते तमाम वर्षों के दुःख दूर हो गए.

घंटी के गीत ने नई दोस्ती का आगाज़ किया.

घंटी ने पूरी दुनिया के लोगों के दिलों में शांति की आशा जगाई.



"ओबाह-चान," युक् ने अपनी दादी के कान में फुसफुसाकर पूछा,  
"क्या घंटी वास्तव में आपके लिए यह सब कर पाई?"

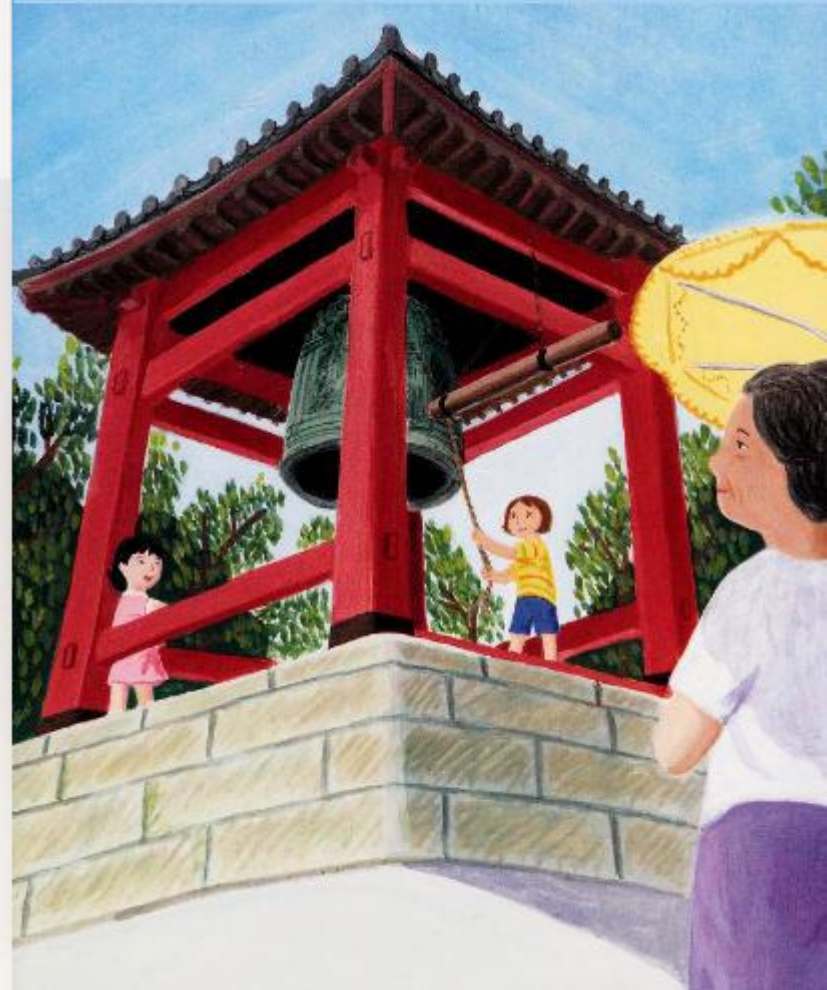
"सब चीजें कुछ-न-कुछ कहना चाहती हैं," युको की दादी ने कहा,  
"मगर हमें उनकी बातें समझ में आनी चाहिए."

बस तभी हम पेड़ों से एक छोटे से झुरमुटे से बाहर निकले जहां एक  
लाल मीनार से घंटी लटकी थी.

"यह वही घंटी है जो मिनेसोटा में केटी-चान के शहर में कुछ वर्षों  
तक लटकी थी. चलो आगे बढ़ो, और घंटी को बजाओ."



मैंने रस्सी को अपने हाथों में लिया. लेकिन इससे पहले कि मैं  
उसकी ध्वनि सुनती, मुझे उसका गीत पता था. या कम-से-  
कम मुझे उसकी कोमल और गहरी आवाज़ का अंदाज़ था.  
मैं उसे अपने दिल में महसूस कर सकती थी.



## कहानी के बारे में एक नोट

द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान युद्ध के प्रयास में हजारों जापानी मंदिरों की घंटियां दान की गईं थीं। इन घंटियों को पिघलाकर युद्ध के लिए आवश्यक सामग्री में बदल दिया गया था। दान की गईं जो कुछ घंटियाँ बच गईं थीं; उनमें से कुछ को उनके मूल शहरों को लौटाया गया। यद्यपि यहां बताई गई कहानी काल्पनिक है, यह दो शहरों की एक सच्ची कहानी से प्रेरित है - एक जापान में और दूसरा अमेरिका में।

युद्ध के दौरान कभी जापान के ओहारा शहर ने एक मंदिर की घंटी दान की थी। 1946 तक, यह घंटी योकोसुका शिपयार्ड में अछूती पड़ी रही। किसी को नहीं पता कि वो घंटी क्यों बच गई। लेकिन बाद में एक अमेरिकी नौसेना के दल के सदस्यों ने उसे खोजा। उस समय वे लोग जापान में तैनात थे।



नौसेना के दल ने मिनेसोटा में झील सुपीरियर के तट पर बसे एक छोटे शहर - डुलुथ को यह घंटी भेंट की। आठ साल तक घंटी डुलुथ के सिटी हॉल में मौन पड़ी रही। उससे किसी भी तरह की आवाज़ नहीं हुई। तब एक जापानी प्रोफेसर ने घंटी के बारे में सुना और उसके बारे में जांच-पड़ताल शुरू की। अपने शोध से उन्हें यह पता चला कि घंटी एक प्रसिद्ध कारीगर द्वारा वर्ष 1686 में तैयार की गई थी। घंटी पर खुदे प्रमुख नागरिकों के नामों की जांच से उसके शहर के बारे में भी मालूम पड़ा। घंटी की उत्पत्ति ओहारा शहर में हुई थी जो प्राचीन में चिबा प्रान्त के नाम से जाना जाता था।

सद्भावना के एक संकेत के रूप में, डुलुथ ने मई 1954 की शुरुआत में ओहारा शहर को वो घंटी लौटा दी। बड़ी धूमधाम से, घंटी को अमेरिकी-जापानी मैत्री शांति घंटी का नाम दिया गया और एक पहाड़ी के शिखर पर रखा गया। युद्ध के दौरान इस शिखर ने एक बम-आश्रय (शेल्टर) का काम किया था। 1989 में दोनों शहरों के बीच मैत्री संबंध शुरू हुआ, और 1991 में ओहारा ने, डुलुथ को घंटी की एक हू-बहू नकल भेंट दी, जो अब वहां एक खूबसूरत पहाड़ी के पार्क में लटकी है।

हालाँकि, युको की दादी एक काल्पनिक चरित्र है, उनकी आत्मा ओहारा (अब ईशुमी) के लोगों में अभी भी जीवित है। वे हर साल - डुलुथ से आये मेहमानों का स्वागत करते हैं। दोनों शहरों के बीच अभी भी मधुर संबंध जारी है।

समाप्त